प्रकृति की रहस्यमय दुनिया

सर्द रातों की शीतलता भरी सुबह
सूरज किरणें लुका-छिपी खेलती
धरती मानो ओढ़े है सफेद चादर
मरुस्थल में विचित्र प्रकृति नजारा

एकाएक जमीन पर पहाड़ी तस्वीर
पर बर्फ़ से न घिरे घर टीले चोटी
दबे पांव खिड़की पर दस्तक दिया
मैं इसी प्राकृतिक प्रक्रिया का अंश
अस्तित्व का अहसास सहजता से
अपनी उपस्थिति से परिचय दिया

गगन चूमती इमारतें हुई ओझल
उजाले में भी धूमिल होती राहें
पल भर में ही अनदेखा सिलसिले
यूं ही शुरू मानव नियति से हारे
परछाइयाँ भी खुद से शर्माती हुई।

प्रकृति का निर्मल स्वरूप 'कोहरा'
अद्भुत इसकी मायावी दुनियादारी
खोजते रास्ते पर भटकते राहगीर
मंज़िलें पहुंचने की होड़ में है सब
देरी पर हाय-तौबा क्यों है मची?

क्षणिक असुविधा पर खेद न करें
यदा-कदा देखने मिले यह नजारा
है रोमांचक प्राकृतिक प्रक्रिया यह!

किरणों की रोशनी में होए विलीन
फिर नई सुबह का करें आगाज
सब कुछ वैसा ही स्पष्ट, विशाल
इसी में छिपें जीवन नए आयाम
सही मार्ग की वही दिशा-निर्देश

अहसानमंद है हम प्रकृति रूपों के
यही सीखते है हमें धैर्यवान बनना
संभावनाओं को परखने की कला।

कोहरे की शीतल छाया में हमेशा
खुद पाए नए दृष्टिकोण का साथ
हर दिन वही सवेरा रहे ऊर्जा भरा
ऋतुओं की रहस्यों से भरी दुनिया

गीतांजलि सक्सेना 2024